

## Table of Contents

1. नाट्य रूपांतरण का परिचय
2. कहानी से नाटक में रूपांतरण की प्रक्रिया
3. संवाद लेखन और चरित्र चित्रण
4. मनोभावों का नाटकीय प्रस्तुतीकरण
5. रूपांतरण में परिवेश और परिस्थितियाँ
6. रूपांतरण से पूर्व रंगमंच की जानकारी

### नाट्य रूपांतरण का परिचय

नाट्य रूपांतरण का अर्थ है किसी कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करना। कहानी और नाटक दोनों में कथानक, पात्र, संवाद और परिवेश होते हैं, परंतु नाटक मंच पर अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत होता है सुनाई जाती है। नाट्य रूपांतरण में कहानी के तत्वों को इस प्रकार ढालना होता है कि वे मंचीय प्रस्तुति के अनुकूल हों।

### मुख्य बिंदु

- कहानी और नाटक के बीच समानताएँ और भिन्नताएँ समझना आवश्यक है।
- नाटक में दृश्य, संवाद, अभिनय, मंच सज्जा, प्रकाश और संगीत का महत्त्व होता है।
- कहानी को दृश्यों में विभाजित कर नाटक का रूप दिया जाता है।
- संवाद छोटे, प्रभावशाली और बोलचाल की भाषा में होने चाहिए।

### पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

नारायण प्रसाद बेताब की पंक्तियाँ - "न ठठ हिंदी, न खालिस उर्दू, ज़बान गोया मिली-जुली हो" यह दर्शाती हैं कि भाषा मिश्रित और सहज होनी चाहिए।



## हल किए गए उदाहरण

ईदगाह कहानी के मेले के दृश्य को नाटक में रूपांतरित करना, जहाँ बच्चों का उतावला व्यवहार और हामिद तथा उसकी दादी के संवाद शामिल हों।

## अभ्यास प्रश्न

- स्तर 1: नाटक और कहानी में क्या समानताएँ हैं?
- स्तर 2: कहानी को नाटक में रूपांतरित करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
- स्तर 3: नाट्य रूपांतरण में संवादों को प्रभावशाली बनाने के उपाय बताइए।

## उत्तर कुंजी

- दोनों में कथानक, पात्र, संवाद होते हैं।
- दृश्य, संवाद, अभिनय, मंच सज्जा आदि का ध्यान रखना चाहिए।
- संवाद छोटे, प्रभावशाली और बोलचाल की भाषा में होने चाहिए।

## त्वरित संदर्भ

नाट्य रूपांतरण कहानी को दृश्य, संवाद और अभिनय के माध्यम से जीवंत बनाना है।

## शब्दावली

- नाट्य रूपांतरण: कहानी को नाटक में बदलने की प्रक्रिया।
- दृश्य: नाटक का वह भाग जो एक समय और स्थान पर घटित होता है।
- संवाद: पात्रों के बीच बातचीत।
- मंच सज्जा: नाटक के मंच की सजावट।

## कहानी से नाटक में रूपांतरण की प्रक्रिया

कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए सबसे पहले कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित कर दृश्यों का निर्माण किया जाता है। प्रत्येक दृश्य का कथानक के अनुसार तात्त्विक दृश्य में संवाद, पात्र, परिवेश और घटनाओं का समावेश होता है। अनावश्यक दृश्य नाटक की गति को बाधित करते हैं इसलिए उन्हें हटाना चाहिए।

## मुख्य बिंदु

- कथावस्तु को घटनाओं के आधार पर विभाजित करना।
- प्रत्येक दृश्य का प्रारंभ, मध्य और अंत होना आवश्यक है।
- दृश्य का उद्देश्य और संरचना स्पष्ट होनी चाहिए।
- परिवेश और पात्रों की जानकारी संवाद या मंच सज्जा के माध्यम से देना।

## पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

ईदगाह कहानी में मेले का दृश्य जहाँ बच्चे भाग-दौड़ कर रहे हैं और हामिद तथा उसकी दादी के संवाद होते हैं।



## ईदगाह के नाट्य रूपांतरण का एक दृश्य

### हल किए गए उदाहरण

कहानी के मेले के दृश्य को तीन भागों में विभाजित कर नाटक के तीन दृश्यों के रूप में प्रस्तुत करना।

### अभ्यास प्रश्न

- स्तर 1: नाटक में दृश्य क्या होते हैं?
- स्तर 2: कहानी को नाटक में रूपांतरित करते समय दृश्य निर्धारण में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
- स्तर 3: अनावश्यक दृश्यों को हटाने का महत्त्व समझाइए।

### उत्तर कुंजी

- दृश्य नाटक का वह भाग है जो एक समय और स्थान पर घटित होता है।
- दृश्य का कथानक के अनुसार तार्किक विकास और उद्देश्य होना चाहिए।
- अनावश्यक दृश्य नाटक की गति को धीमा करते हैं और दर्शकों को उबाते हैं।

### त्वरित संदर्भ

दृश्य नाटक की कहानी को छोटे-छोटे भागों में बांटकर प्रस्तुत करते हैं।

## शब्दावली

- कथावस्तु: कहानी में घटित घटनाओं का क्रम।
- दृश्य: नाटक का एक भाग जो एक समय और स्थान पर होता है।
- मंच सज्जा: नाटक के मंच की सजावट।

## संवाद लेखन और चरित्र चित्रण

नाट्य रूपांतरण में संवादों को छोटा, प्रभावशाली और बोलचाल की भाषा में लिखना आवश्यक है। कहानी के पात्रों की दृश्यात्मकता को नाटक में प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए। अभिनय, भावभंगिमा, चरित्र चित्रण को सजीव बनाता है। ध्वनि और प्रकाश भी पात्रों के मनोभाव व्यक्त करने में सहायक होते हैं।

## मुख्य बिंदु

- संवाद छोटे और प्रभावशाली होने चाहिए।
- चरित्रों की दृश्यात्मकता और भावभंगिमाएँ महत्वपूर्ण हैं।
- स्थानीय भाषा और रंग का प्रयोग संवादों को जीवंत बनाता है।
- ध्वनि और प्रकाश का उपयोग संवेदनात्मक प्रभाव के लिए किया जाता है।

## पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

ईदगाह में हामिद के नंगे पैर होने का अनुमान और अन्य लड़कों के कपड़ों से उनकी आर्थिक स्थिति का पता चलता है।

## कुछ प्रसिद्ध कहानियाँ जिनका सफलतापूर्वक नाट्य रूपांतरण हुआ

|                                                                 |   |              |
|-----------------------------------------------------------------|---|--------------|
| ▶ चीफ़ की दावत                                                  | — | भीष्म साहनी  |
| ▶ टोबा टेक सिंह                                                 | — | मंटो         |
| ▶ डिप्टी कलेक्टरी                                               | — | अमरकांत      |
| ▶ दुविधा                                                        | — | विजयदान      |
| ▶ कफ़न                                                          | — | प्रेमचंद     |
| ▶ बड़े भाई साहब                                                 | — | प्रेमचंद     |
| ▶ मोटेराम शास्त्री                                              | — | प्रेमचंद     |
| ▶ ईदगाह                                                         | — | प्रेमचंद     |
| ▶ रुपया तुम्हें खा गया                                          | — | भगवती चरण    |
| ▶ वारेन हेस्टिंग्स का साँढ़                                     | — | उदय प्रकाश   |
| ▶ और अंत में प्रार्थना                                          | — | उदय प्रकाश   |
| ▶ मोहनदास                                                       | — | उदय प्रकाश   |
| ▶ धूप का टुकड़ा, डेढ़<br>इंच ऊपर, वीक एंड<br>(तीन एकांत नाम से) | — | निर्मल वर्मा |

### हल किए गए उदाहरण

कहानी के लंबे संवादों को छोटा कर नाटक के संवादों में रूपांतरित करना।

### अभ्यास प्रश्न

- स्तर 1: नाट्य संवादों की विशेषताएँ क्या हैं?
- स्तर 2: चरित्र चित्रण में अभिनय का क्या महत्त्व है?
- स्तर 3: ध्वनि और प्रकाश का नाटक में उपयोग कैसे किया जाता है?

### उत्तर कुंजी

- संवाद छोटे, प्रभावशाली और बोलचाल की भाषा में होते हैं।
- अभिनय से पात्रों के मनोभाव स्पष्ट होते हैं।

- ध्वनि और प्रकाश से संवेदनात्मक प्रभाव उत्पन्न होता है।

## त्वरित संदर्भ

संवाद और अभिनय नाटक को जीवंत बनाते हैं।

## शब्दावली

- भावभंगिमा: चेहरे और शरीर की अभिव्यक्ति।
- मैनेरिज़्म: किसी पात्र के विशेष हाव-भाव।
- स्वगत कथन: पात्र का अपने आप से संवाद।

## मनोभावों का नाटकीय प्रस्तुतीकरण

कहानी के मनोभावों और मानसिक द्वंद्व को नाटक में प्रस्तुत करना चुनौतीपूर्ण होता है। इसके लिए स्वगत कथन, वायस ओवर, फ्लैशबैक जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है। पात्रों के भावों को अभि-प्रस्तुति के माध्यम से दर्शाया जाता है।

## मुख्य बिंदु

- मनोभावों को नाटकीय रूप में प्रस्तुत करना कठिन होता है।
- स्वगत कथन और वायस ओवर का प्रयोग किया जाता है।
- फ्लैशबैक शैली से अतीत के दृश्य दिखाए जाते हैं।
- अभिनय और हाव-भाव से भावों को व्यक्त किया जाता है।

## पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

ईदगाह में हामिद का द्वंद्व कि क्या खरीदे और अम्मा के हाथ जलने का भय।

## हल किए गए उदाहरण

स्वगत कथन के माध्यम से हामिद के मनोभावों को मंच पर प्रस्तुत करना।

## अभ्यास प्रश्न

- स्तर 1: स्वगत कथन क्या होता है?
- स्तर 2: नाटक में मनोभावों को प्रस्तुत करने के अन्य तरीके बताइए।
- स्तर 3: फ्लैशबैक शैली का नाट्य रूपांतरण में उपयोग कैसे होता है?

## उत्तर कुंजी

- स्वगत कथन पात्र का अपने आप से संवाद होता है।
- वायस ओवर और फ्लैशबैक तकनीकें मनोभाव प्रस्तुत करने में सहायक हैं।
- फ्लैशबैक से अतीत के दृश्य दिखाए जाते हैं।

## त्वरित संदर्भ

मनोभावों का नाटकीय प्रस्तुतीकरण तकनीकी और कलात्मक कौशल मांगता है।

## शब्दावली

- स्वगत कथन: पात्र का अपने आप से संवाद।
- वायस ओवर: ऐसी ध्वनि जो दर्शकों को सुनाई देती है पर पात्र नहीं बोलता।
- फ्लैशबैक: अतीत के दृश्य दिखाने की तकनीक।

## रूपांतरण में परिवेश और परिस्थितियाँ

कहानी में वर्णित परिवेश और परिस्थितियों को नाटक में शामिल करना आवश्यक होता है। विवरणात्मक टिप्पणियाँ मंच सज्जा, पार्श्व संगीत या संवादों के माध्यम से प्रस्तुत की जाती हैं। यह सुनिश्चित करना : दोहराई न हो और नाटक की गति बाधित न हो।

## मुख्य बिंदु

- परिवेश और परिस्थितियों की जानकारी संवाद या मंच सज्जा से दी जाती है।
- विवरणात्मक टिप्पणियाँ दोहराई नहीं जानी चाहिए।
- परिवेश नाटक की गति को प्रभावित करता है।

## पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

ईदगाह में मेले का वातावरण और बच्चों का उत्साह।

## हल किए गए उदाहरण

मंच सज्जा और पार्श्व संगीत के माध्यम से मेले का वातावरण प्रस्तुत करना।

## अभ्यास प्रश्न

- स्तर 1: नाटक में परिवेश कैसे प्रस्तुत किया जाता है?
- स्तर 2: विवरणात्मक टिप्पणियों को नाटक में शामिल करने के तरीके बताइए।
- स्तर 3: परिवेश के प्रभाव को नाटक की सफलता में कैसे जोड़ा जा सकता है?

## उत्तर कुंजी

- परिवेश संवाद, मंच सज्जा और संगीत से प्रस्तुत किया जाता है।
- विवरणात्मक टिप्पणियाँ संवाद या पार्श्व संगीत के माध्यम से दी जाती हैं।
- परिवेश नाटक की भावात्मक गहराई बढ़ाता है।

## त्वरित संदर्भ

परिवेश नाटक की वास्तविकता और प्रभावशीलता को बढ़ाता है।

## शब्दावली

- परिवेश: किसी घटना या कहानी का वातावरण।
- पार्श्व संगीत: नाटक में उपयोग होने वाला संगीत।
- मंच सज्जा: नाटक के मंच की सजावट।

## रूपांतरण से पूर्व रंगमंच की जानकारी

कहानी का नाट्य रूपांतरण करने से पहले वर्तमान रंगमंच की संभावनाओं को समझना आवश्यक है। अच्छी नाट्य प्रस्तुतियाँ देखकर रंगमंच की तकनीक, अभिनय शैली और प्रस्तुति के तरीकों की जानकारी इससे रूपांतरण का कार्य सफल होता है।

## मुख्य बिंदु

- रंगमंच की तकनीक और प्रस्तुति की समझ आवश्यक है।
- अच्छे नाटक देखकर अनुभव प्राप्त करें।
- लेखक को रंगमंच की संभावनाओं का ज्ञान होना चाहिए।

## पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

अनेक प्रसिद्ध कहानियों जैसे गोदान, देवदास आदि के नाट्य रूपांतरण।

## हल किए गए उदाहरण

अच्छे नाटक देखकर रंगमंच की तकनीक और प्रस्तुति के तरीकों का अध्ययन करना।



## रामायण कथा का नाट्य रूपांतरण

### अभ्यास प्रश्न

- स्तर 1: रंगमंच की जानकारी क्यों आवश्यक है?
- स्तर 2: नाट्य प्रस्तुतियाँ देखने से क्या लाभ होता है?
- स्तर 3: रंगमंच की तकनीक रूपांतरण में कैसे मदद करती है?

### उत्तर कुंजी

- रंगमंच की जानकारी से नाटक की प्रस्तुति बेहतर होती है।
- नाट्य प्रस्तुतियाँ देखकर अनुभव और समझ बढ़ती है।
- तकनीक से संवाद, अभिनय और दृश्य प्रभाव बेहतर बनते हैं।

### त्वरित संदर्भ

रंगमंच की समझ नाट्य रूपांतरण की सफलता की कुंजी है।

### शब्दावली

- रंगमंच: नाटक प्रस्तुत करने का मंच।

- प्रस्तुति: नाटक का मंचीय प्रदर्शन।
- तकनीक: नाटक के लिए आवश्यक कलात्मक और तकनीकी विधियाँ।

Prepzy